बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस महोत्सव २०२० के उपलक्ष्य में उनके साथ एक प्रसंग

बाबा जी ने कहा, "परोसते रहो। खाना पर्याप्त होगा"—और ऐसा ही हुआ

वर्ष १९७४ के आरम्भ में, बाबा जी की दूसरी विश्वयात्रा के समय मैं रसोईघर में सेवा अर्पित कर रहा था। एक दिन बाबा जी रसोईघर में आए और उन्होंने कहा कि यह तय करने का समय है कि यात्रा के लिए मुख्य रसोइया कौन रहेगा। इस पद के लिए दो व्यक्ति थे—मैं और दूसरा एक रसोइया—तो बाबा जी ने ऐसा कुछ निर्धारित किया जो मुझे एक प्रतियोगिता जैसा लगा। उन्होंने निर्णय लिया कि एक रसोइया एक दिन खाना बनाएगा और दूसरा रसोइया दूसरे दिन खाना बनाएगा।

जब भी वह दूसरा व्यक्ति खाना बनाता, बाबा जी कहते, "खाना बहुत बढ़िया बना है! तुम बहुत अच्छे रसोइए हो, तुम्हारे जैसा रसोइया नहीं!" जब मैं खाना बनाता था तब वे एक बार भी रसोईघर में नहीं आए। मुझे सचमुच बहुत बुरा लगने लगा।

सप्ताह के अन्त में, बाबा जी ने मुझे बताया, "तुम इस यात्रा पर मुख्य रसोइए रहोगे।" मैं आश्चर्यचकित रह गया, परन्तु बाबा जी ने समझाया, "पहला रसोइया बिना प्रोत्साहन के काम नहीं कर पाया। पर तुम्हें सतत तारीफ़ की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए, तुम ही रसोइया रहोगे।"

तो, यह है बाबा जी के साथ अगले प्रसंग की भूमिका, वह प्रसंग जिसे मैं कभी नहीं भूलूँगा।

वर्ष १९७५ में, हम स्वतन्त्रता दिवस, ४ जुलाई के महोत्सव पर लगभग दो सौ लोगों के लिए खाना बना रहे थे जब बाबा जी रसोईघर में आए और उन्होंने कहा, "थोड़े और मेहमान होंगे।"

मैंने पूछा, "कितने?"

"सौ-दो सौ," उन्होंने कहा। "क्या खाना पर्याप्त होगा?"

मैंने कहा, "बिलकुल नहीं। खाना पर्याप्त नहीं है।"

बाबा जी ने कहा, “परेशानी यह है कि तुममें पर्याप्त श्रद्धा नहीं है।” फिर उन्होंने हाँडियों पर कुछ बार अपने हाथ से थपथपाया और कहा, “परोसते रहो। खाना पर्याप्त होगा।”

तो हम बस परोसते रहे . . . परोसते रहे . . . और बहुत देर तक परोसते रहे। हमें पता था कि हमने पर्याप्त खाना नहीं बनाया है, परन्तु वह बस हाँडियों से बाहर आता रहा। खाना भरपूर था।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।